17वीं लोक सभा के अंतिम सत्र के समापन पर माननीय अध्यक्ष महोदय का सम्बोधन

माननीय प्रधानमंत्री जी और माननीय सदस्यगण, 17वीं लोक सभा के इस सत्र के साथ इस लोक सभा का भी आज समापन हो रहा है। 17वीं लोक सभा इसलिए विशेष है कि भारत के अमृत काल में हमने संसद के पुराने भवन और नए भवन, दोनों भवनों में अपने संसदीय दायित्वों को निभाया। यह अवसर हमें मिला, यह अवसर भी हमेशा हमारी जिन्दगी में स्मरणीय रहेगा। नए भवन में स्थापित पवित्र सेंगोल न्याय, सुशासन, राष्ट्रीय एकता और राजनीतिक शुचिता का प्रतीक है। हमारे महान लोकतंत्र की इस उच्चतम संस्था के पीठासीन अधिकारी के रूप में आप सबके सकारात्मक सहयोग से मैंने दायित्व निभाया। माननीय प्रधानमंत्री जी ने अभी हमें बहुत सारी बातें प्रेरणास्वरूप बताई।

हमारे लिए यह पल ऐतिहासिक पल रहेगा, अद्भुत भी रहेगा। हमारी जिन्दगी भी लोकतंत्र की इस यात्रा के लिए हमेशा स्मृति वाला काल रहेगा।

इन 5 वर्षों में जनता का लोकतंत्र के प्रति, लोकतांत्रिक संस्थाओं के प्रति विश्वास बढ़े, इसके लिए सभी माननीय सदस्यों ने अपने क्षेत्र की जनता की आशाओं और आकांक्षाओं को पूरा करने का प्रयास किया।

उन्होंने यहां अपने क्षेत्र के मुद्दे भी उठाए, देश के मुद्दे भी उठाए और मैं सरकार को भी धन्यवाद देता हूँ कि सरकार ने पहली बार शून्य काल जैसे विषय का सकारात्मक उत्तर देकर एक नई परंपरा स्थापित की।

माननीय सदस्यगण, मुझे 19 जून, 2019 को सर्वसम्मति से सभा का अध्यक्ष चुना। इसके लिए मैं माननीय प्रधानमंत्री जी का और सभी सदस्यों को हार्दिक धन्यवाद देता हूँ।

मेरे लिए भी ये पांच वर्ष जीवन के लिए महत्वपूर्ण हैं और अविस्मरणीय रहेंगे क्योंकि आपके साथ जो पल मैंने गुजारे हैं, वे मुझे हमेशा प्रेरणा देते रहेंगे।

माननीय सदस्यगण, इस सदन की बड़ी उच्च परंपरा और परिपाटियां रही हैं। इस सदन की गरिमा और प्रतिष्ठा रही है। मुझसे पूर्व, यहां बैठने वाले पूर्ववर्ती अध्यक्षों ने इस सदन कही गरिमा, प्रतिष्ठा और मान – मर्यादा को बढ़ाया है। मैंने भी प्रयास किया है कि सभी दलों के नेताओं के सहयोग से इस पद की गरिमा और इस संस्था की सर्वोच्च प्रतिष्ठा बनी रहे और इसके लिए आपका सहयोग भी रहा, इसके लिए भी मैं आपको धन्यवाद देता हूँ।

17वीं लोक सभा का कार्यकाल कई अर्थों में ऐतिहासिक रहा है। सभा के पीठासीन अधिकारी के रूप में जब मुझे दायित्व मिला, तो मैंने कोशिश की। मैं सदन में दूसरी बार माननीय सदस्य था, मेरा कोई लंबा अनुभव नहीं था, लेकिन आप सबका सहयोग मिला और पहले सत्र में ही बिना व्यवधान के सदन की प्रोडक्टिविटी भी रही और सभी माननीय सदस्यों ने, विशेष रूप से नए और पुराने 540 सदस्यों ने सत्र के पहले सत्र में ही अपनी भागीदारी निभाई और अपने विचार व्यक्त किए, यह अपने आप में ऐतिहासिक उपलब्धि रहेगी।

माननीय सदस्यगण, नए संसद भवन की आवश्यकता की बहुत दिनों से लोग चर्चा कर रहे थे। पूर्ववर्ती अध्यक्षों ने भी इसके लिए प्रयास किया। मैंने और सदन के सभी सदस्यों ने माननीय प्रधानमंत्री जी से संसद के नये भवन बनाने का आग्रह किया। माननीय प्रधानमंत्री जी ने हमारे दोनों सदनों के आग्रह को स्वीकार किया और इसके निर्माण की स्वीकृति दी।

माननीय प्रधानमंत्री जी के विजनरी नेतृत्व, उनकी अद्भुत कार्यशैली और हमारे श्रमवीरों, जिन्होंने कोविड के समय अथक प्रयास किए, इसके कारण नया संसद भवन 2 वर्ष 5 महीने की अल्प अवधि में बनकर तैयार हुआ।

माननीय सदस्यगण, यह कालखंड हमारे लिए बहुत चुनौतीपूर्ण रहा। विशेष रूप से वैश्विक महामारी कोरोना की चुनौती हमारे सामने थी। देश की जनता सुरक्षित रहे, उनके कल्याण में, उनके सहयोग में, हम अपने संवैधानिक दायित्वों को निभाएं।

मैं आज यह कह सकता हूँ कि सभी माननीय सदस्यों ने उन चुनौतियों के समय में भी देर रात तक बैठकर संवैधानिक दायित्वों को निभाया और 167 परसेंट प्रोडक्टिविटी रही।

जैसा कि माननीय प्रधानमंत्री जी ने बताया कि कोरोना काल गंभीर था, लेकिन मैं माननीय प्रधानमंत्री जी को धन्यवाद देना चाहता हूँ कि उन्होंने देश की भी चिंता की और अपने एक-एक माननीय सदस्यों की भी चिंता की।

जब भी उन्हें जानकारी मिलती थी, वे व्यक्तिगत रूप से टेलीफोन करते थे और उनसे बात हो न हो, लेकिन डॉक्टरों से जरूर चिंता व्यक्त करते थे।

माननीय सदस्यगण, 17वीं लोक सभा का यह सत्र अपनी प्रोडक्टिविटी में भी ऐतिहासिक रहा। पिछली पांच लोक सभा में, सबसे ज्यादा प्रोडक्टिविटी इस लोक सभा में 97 प्रतिशत रही। इसमें विशेष रूप से

महिलाओं की भागीदारी रही है। सदन के कामकाम में उनकी सक्रिय भागीदारी रही। मैं देखता था कि देर रात्रि तक महिलाएं यहां बैठती थीं और वे अपने क्षेत्र की जनता की भावनाओं को अभिव्यक्त करती थीं।

माननीय सदस्यगण, यह हमारे लिए गौरव का विषय रहा कि नए संसद भवन के अंदर सर्वप्रथम दिन ही नारी शक्ति वंदन विधेयक, 2023 चर्चा के लिए लाया गया और यह विधेयक पारित हुआ। इसके लिए मैं माननीय प्रधानमंत्री जी को भी धन्यवाद देता हूँ। यह विधेयक महिला सशक्तिकरण की दिशा में एक अभूतपूर्व उपलब्धि रहेगी। वर्षों तक इन सदनों में महिला आरक्षण विधेयक की प्रतीक्षा हो रही थी। लेकिन, यह सौभाग्य आपको ही मिला। आपके समय में ही यह महिला आरक्षण विधेयक पारित हुआ।

इसके अलावा, इस सदन में बहुत महत्वपूर्ण और ऐतिहासिक विधेयक पारित हुए। हम अंग्रेजों के कानूनों को लेकर चल रहे थे। हमने अपनी आजादी के बाद अपने कानून बनाए। भारतीय न्याय संहिता, भारतीय साक्ष्य बिल, भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता और विशेष रूप से इस सदन ने जम्मू कश्मीर पुनर्गठन विधेयक भी पारित किया।

उसके साथ – साथ डिजिटल पर्सनल डेटा, मुस्लिम महिला विधेयक, उपभोक्ता संरक्षण विधेयक, प्रत्यक्ष कर विधेयक, औद्योगिक संबंधी विधेयक, ऐसे कई ऐतिहासिक कानून पारित किए गए। आपकी जिन्दगी में भी यह स्मरण रहे कि आपने बहुत ऐतिहासिक विधेयक पारित किए, जिनसे एक लंबे समय तक देश की आर्थिक और सामाजिक स्थिति में एक बहुत बड़ा परिवर्तन होगा। यह मौका भी आप सबको, हम सबको मिला है। विगत पांच वर्षों में विशेष रूप से भारतीय चिंतन को और भारतीय चिंतन की व्यवस्था को आगे बढ़ाने के लिए कानून पारित किए गए।

इस सभा ने पांच वर्षों में, जो बहुत अनुपयोगी कानून थे, उन कानूनों को रिपील करने का काम भी इसी सभा ने किया। इस सभा ने तीन संविधान संशोधन विधेयक भी पारित किए।

माननीय सदस्यगण, 17वीं लोक सभा का गठन दिनांक 25 मई, 2019 को किया गया था। इस सदन की पहली बैठक 17 जून, 2019 को हुई। 17वीं लोक सभा में कुल मिलाकर 274 बैठकें हुईं जो 1355 घंटे तक चली। हमने सदन ने नियत समय से 346 घंटे की अधिक अवधि तक बैठकर अपना कार्य किया। इसी लोक सभा में व्यवधान के कारण कुल 387 घंटे का समय व्यर्थ हुआ। इन पाँच वर्षों की अवधि में हमने गहन चर्चा

संवाद के बाद 222 कानून पारित किये। इस अवधि के दौरान 202 विधेयक पुरःस्थापित किए गए तथा 11 विधेयकों को सरकार द्वारा वापस लिया गया।

17वीं लोक सभा के दौरान 4663 तारांकित प्रश्न सूचीबद्ध किए गए, जिनमें से 1,116 प्रश्नों के मौखिक उत्तर दिए गए। इसी अवधि में 55,889 अतारांकित प्रश्न भी पूछे गए जिनके लिखित उत्तर सदन में दिए गए। इस लोक सभा में दो अवसर ऐसे भी आए, जब सूचीबद्ध सभी 20 प्रश्नों के मौखिक उत्तर दिए गए।

माननीय सदस्यगण, इस लोक सभा में 729 गैर-सरकारी विधेयक सदन में प्रस्तुत किए गए। 17वीं लोक सभा के दौरान संबंधित मंत्रियों ने 26,750 पत्र सभा पटल पर रखे।

इस लोक सभा के दौरान शून्य काल के अंतर्गत 5,568 मामले उठाए गए जब कि नियम 377 के अंतर्गत 4869 विषय माननीय सदस्यों द्वारा उठाए गए।

दिनांक 18 जुलाई, 2019 को शून्य काल के अंतर्गत एक दिन में कुल 161 विषय उठाए गए और माननीय सदस्यों ने देर रात्रि तक भागीदारी निभाई। 17वीं लोक सभा के पहले सत्र में शून्य काल में 1,066 मामले उठाए गए, जो अपने आप में एक कीर्तिमान है।

माननीय सदस्यगण, जैसा कि मैंने बताया कि पहली बार नियम 377 और शून्य काल के जवाब पर यहां पर सही समय पर कार्यपालिका के माध्यम से आए हैं। इसी लोक सभा में चंद्रयान मिशन की सफलता और अंतरिक्ष के क्षेत्र में देश की उपलब्धियों पर भी चर्चा हुई और सभा द्वारा इस विषय पर एक संकल्प पारित किया गया। सभा द्वारा “भारतीय अर्थव्यवस्था और भारत के लोगों के जीवन पर इसके प्रभाव” विषय पर नियम 342 के अंतर्गत चर्चा की गई।

माननीय सदस्यगण, इसी सदन में माननीय प्रधानमंत्री जी ने 5 फरवरी 2020 को श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट की स्थापना की घोषणा की थी। यह देश के लिए गौरव का विषय है कि अब श्रीराम मंदिर का निर्माण कार्य पूरा हो चुका है। इस विषय पर आज सदन में चर्चा हुई। सभी माननीय सदस्यों ने सार्थक रूप से अपने विचार रखे और चर्चा के उपरांत वर्ष 2047 तक एक विकसित और समावेशी भारत के निर्माण का संकल्प भी हमने पारित किया।

माननीय मंत्रियों द्वारा विभिन्न विषयों पर 534 वक्तव्य दिए गए। इस लोक सभा के दौरान नियम 193 के अंतर्गत 12 चर्चाएं भी आयोजित की गई। संसदीय स्थायी समितियों ने इस लोक सभा में उत्कृष्ट कार्य करते हुए कुल 691 प्रतिवेदन प्रस्तुत किए। संसदीय समितियों की 69 प्रतिशत से अधिक सिफारिशों को सरकार द्वारा स्वीकार किया गया।

माननीय सदस्यगण, माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में जी-20 शिखर सम्मेलन का सफल आयोजन किया गया। इससे विश्व पटल पर भारत की नेतृत्व क्षमता प्रदर्शित हुई और उसके बाद जी-20 देशों तथा आमंत्रित देशों की संसदों के अध्यक्षों का पी-20 शिखर सम्मेलन भी आयोजित हुआ। इससे विश्व में हमारा लोकतंत्र, हमारे लोकतंत्र की यात्रा का अनुभव सभी अध्यक्षों ने किया।

माननीय प्रधानमंत्री जी ने पी-20 सम्मेलन में संबोधित करते हुए हमारे देश की लोकतंत्र की यात्रा का विजन रखा। उन्होंने लोकतंत्र के साथ हमारी चुनाव प्रणाली और किस तरीके से इस देश में एक निष्पक्ष चुनाव प्रणाली है, उन्होंने आग्रह किया कि सभी लोकतांत्रिक देश यहां के लोकतंत्र के इस पर्व, उत्सव को देखने के लिए भारत आएं। किसी लोकतांत्रिक देश की तो उतनी आबादी नहीं होग, उससे ज्यादा हमारे यहां मतदाता मतदान करते हैं। ये भी अपने आप में एक प्रेरणा है।

माननीय प्रधानमंत्री जी की प्रेरणा से ही पी-20 सम्मेलन के पूर्व 'मिशन लाइफ पर्यावरण के लिए जीवन शैली' पर भी संसदीय मंच पर चर्चा हुई, जिसमें प्रकृति के साथ सद्भावना में एक हरित भविष्य के लिए संकल्प लिया गया। इस कार्यक्रम में सभी प्रतिभागी देशों ने समर्थन किया और सभी संसदों के अध्यक्षों ने संकल्प लिया कि हम अपने अपने देशों के अंदर भी इसी तरीके का संकल्प लेंगे, प्रस्ताव करेंगे और चर्चा करेंगे।

इस लोक सभा में संविधान दिवस कार्यक्रम वर्ष 2019 और 2021 में संसद भवन में आयोजित किया गया। संसद की लोक लेखा समिति (PAC) की स्थापना के 100 वर्ष पूरे होने के अवसर पर केन्द्रीय कक्ष में एक विशेष कार्यक्रम 4 दिसंबर, 2021 को आयोजित किया गया। दिनांक 19 सितंबर, 2023 को संविधान सदन के केन्द्रीय कक्ष में 'संविधान सभा से अब तक 75 वर्षों की संसदीय यात्रा, उपलब्धियां, अनुभव, स्मृतियां और सीख' विषय पर एक विशेष चर्चा आयोजित की गई।

मैं विशेष रूप से माननीय प्रधानमंत्री जी के विज़न के कुछ विषय उठाना चाहता हूँ। लोक सभा टीवी चैनल और राज्य सभा टीवी चैनल अलग अलग चलते थे। माननीय प्रधानमंत्री जी के मार्गदर्शन से संसद टीवी एक चैनल हुआ, जिससे करोड़ों रुपये की वित्तीय बचत भी हुई। इसी तरीके से सब्सिडी का विषय हमेशा हम पर उठता रहता था। अब पूर्ण रूप से सब्सिडी समाप्त कर दी गई, जिससे 15 करोड़ रुपये की वार्षिक बचत हुई।

मैं आपको एक उदाहरण पेश करना चाहता हूँ। संसद भवन में राष्ट्रीय पर्वों पर लाइट पर लाखों रुपये खर्च होते थे। माननीय प्रधानमंत्री जी का विज़न और मार्गदर्शन था और उन्होंने कहा कि यहां एक फसाड लाइट की तरह परमानेंट लाइट लगनी चाहिए। यहां पर फसाड लाइट लगी और कम समय में लगी और इस ससद के

लाखों करोड़ रुपये की बचत हुई, जो 75वें वर्ष से अभी तक लग रही है। इन सभी व्यवस्थाओं से इन पांच वर्षों के अंदर लगभग 875 करोड़ रुपये की बचत की गई, जो बजट का 23 प्रतिशत हिस्सा है।

कोरोना के समय माननीय सांसदों PM CARES Fund में अपने फंड को दिया और अपनी सांसद निधि को भी छोड़ा। मैं उसके लिए श्री सांसदों को धन्यवाद देता हूँ। यहां पर इस पूरे परिसर को हरा भरा बनाने के लिए भी सभी माननीय सदस्यों ने अपने अपने नाम का वृक्षारोपण किया, जो हमेशा उनकी जिंदकी में स्मृति में रहेगी। वे जब भी आएंगे, अपने पेड़ को बड़ा होते देखेंगे तो याद करेंगे।

माननीय सदस्यगण, सदन के अंदर सभी विधेयकों पर सार्थक वाद विवाद और चर्चा हुई और सभी ने इन पर ठीक से अपने विचार रखे। हमने कुछ नए प्रयास किए कि विधेयक पर चर्चा से पहले माननीय सदस्यों को ब्रीफिंग सेशन के माध्यम से विधेयकों की जानकारी, उद्देश्य और विधेयकों के प्रभाव के बारे में लगातार कार्यक्रम आयोजित किए गए। कई माननीय सदस्यों को जानकारी होगी कि यहां पर किसी भी विधेयक या किसी भी विषय पर माननीय सदस्यों को 24 घंटे शोध सहायता उपलब्ध रहती है।

हमने इसी के साथ साथ, नई व्यवस्था शुरू की कि लाइब्रेरी की सामग्री की होम डिलीवरी हो और सारी लाइब्रेरी के डिजिटाइजेशन का काम किया। अभी तक संसद की जितनी भी डिबेट्स है, उन सारी डिबेट्स के डिजिटाइजेशन का काम किया गया। मेटा डाटा, सब्जेक्ट, नाम और विषय से आप पूरी डिबेट को देख सकते हैं। यह भी नवाचार इस संसद ने किया। समृद्ध लाइबेरी को आम जनता के लिए सुलभ कर दिया है। आप सबके प्रयासों से, सहयोग से यह सदन पेपरलेस हो चुका है। अभी 97 प्रतिशत से अधिक प्रश्न इलेक्ट्रानिक रूप से माननीय सदस्यों के द्वारा लगाए जाते हैं।

इसी के साथ, संसद के नए भवन में हिन्दी, अंग्रेजी के अलावा दस अन्य भारतीय भाषाओं में भाषांतरण सेवा उपलब्ध कराने का भी प्रयास किया गया है। इसी के साथ साथ हमने डिजिटल एप, डिजिटल संसद और आप जो अपनी बात कहते हैं, उसको आधे घंटे में वाट्सएप पर आपके मोबाइल पर उपलब्ध कराने का भी प्रयास किया गया है।

माननीय सदस्यगण, आवास पुराने हो गये थे। माननीय प्रधानमंत्री जी ने एक मार्गदर्शन दिया और अभी 112 नए आवास बनकर तैयार हो गए हैं और 184 आवासों का निर्माण कार्य चल रहा है ताकि जब हमारे माननीय सदस्य आएं, तो उन्हें नए आवास मिले, इसका भी एक प्रयास किया गया।

माननीय सदस्यगण, लोकतंत्र में युवाओं की भागीदारी रहे और हमारी आने वाली पीढ़ी हमारे देश की आजादी, आजादी के बाद जिन नेताओं को योगदान रहा, उनके बारे में जाने, उनके जीवन के बारे में जानें, इसके लिए माननीय प्रधानमंत्री जी के मार्गदर्शन में एक कार्यक्रम आयोजित किया गया।

हर महान विभूति और स्वतंत्रता सेनानी की जयंती पर कार्यक्रम आयोजित किया जाता है। संविधान सदन में देश भर के अलग अलग राज्यों के लोग अपने अपने राज्यों में पहले उन महापुरुषों पर चर्चा करते हैं और जब उसमें उत्तीर्ण होते हैं, तब वे संसद भवन में आकर अपनी बात को रखते हैं, ताकि हमारी आने वाली पीढ़ी हमारे महापुरुषों के बारे में जानें। उनके राष्ट्र और देश के प्रति कर्तव्य के बारे में जाने ताकि उन्हें भी नई प्रेरणा मिले।

माननीय सदस्यगण, इस लोक सभा के दौरान अखिल भारतीय पीठासीन अधिकारियों के 6 सम्मेलन आयोजित किए गए और हमने प्रयास किया कि देश की सभी लोकतांत्रिक संस्थाओं में चाहे विधान सभा हो, या लोक सभा हो, उनमें शब्दों की प्रतिष्ठा बने, गरिमा बने और हमारे सदस्यों का आचरण, व्यवहार ऐसा हो, ताकि लोगों का लोकतंत्र में और लोकतांत्रिक संस्थाओं में ज्यादा विश्वास और भरोसा बढ़े। इसके लिए सबने एक मत से इस बात पर विचार किया कि सदन की गरिमा और प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिए हम सभी सदस्यों को इस तरह का व्यवहार करना चाहिए कि जनता का विश्वास हमारी संस्थाओं पर ज्यादा बने और हम ज्यादा मर्यादित तरीक से संस्थाओं के माध्यम से लोगों का कल्याण कर सकें।

माननीय प्रधानमंत्री जी ने एक नया विजनरी मार्गदर्शन उस समय दिया- 'वन नेशन - वन लेजिसलेटिव प्लेटफॉर्म'। आज हम कह सकते हैं कि पूरे देश की विधान सभाओं की जो भी डिबेट, चर्चा, बजट और लोक सभा तथा राज्य सभा की जितनी भी कार्यवाहियां हैं, आने वाले समय में एक प्लेटफार्म पर आप देख पाएंगे, ये भी एक नया प्रयास किया गया है।

माननीय सदस्यगण, इस लोक सभा के दौरान भारत में 16 देशों के संसदीय शिष्टमंडल का आगमन हुआ और 42 शिष्टमण्डल भारत से अन्य देशों की विदेश यात्रा पर गए। अंतर्राष्ट्रीय संसदीय मंचों पर कई संस्थाओं के अंदर हमारी भागीदारी भी बढ़ी है और माननीय सदस्यगण कई कमेटियों के सदस्य के रूप में निर्वाचित भी हुए और मनोनीत भी हुए। इससे वैश्विक स्तर पर भारत की शक्ति एवं प्रतिष्ठा बढ़ी है।

माननीय सदस्यगण, सदन के संचालन में आप सभी का सहयोग मुझे निरंतर मिला, सकारात्मक सहयोग मिला। माननीय प्रधानमंत्री जी का भी मिला। सभी दल के नेताओं का मिला और मैंने कोशिश की कि इस सदन की गरिमा और प्रतिष्ठा बनी रहे। सदन की गरिमा और प्रतिष्ठा बनाने में कुछ कठोर निर्णय भी करने

पड़े। लेकिन कठोर निर्णय करते समय मैं कभी इस मत का नहीं था कि मुझे किसी सदस्य पर कार्रवाई करनी पड़े।

भविष्य में हम नये सदन के साथ इस सदन की गरिमा और प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिए और प्रयास करेंगे। हमारी प्रोडक्टिविटी 97 प्रतिशत नहीं, बल्कि हमारी प्रोडक्टिविटी हमेशा सौ प्रतिशत से ऊपर हो। हमारा आचरण और व्यवहार सही हो। असहमति और सहमति हमारे लोकतंत्र की ताकत है। यह होना भी चाहिए।

अलग अलग विचार वाले दलों से लोग चुनकर आते हैं, लेकिन सदन की गरिमा बनी रहे, यह हमारी सामूहिक जिम्मेदारी भी है और मैं आशा करता हूँ कि आने वाले समय में हम इसके लिए प्रयास करेंगे।

यहां पर सभी सदस्य अलग अलग दलों से, अलग अलग विचारधारा से, अलग अलग क्षेत्रों से आते हैं, लेकिन इन पांच सालों में मुझे सब एक परिवार जैसे लगे। मुझे एक ऐसा परिवार लगा, जो हमेशा मेरे जीवन में अविस्मरणीय रहेगा।

मेरे सभी सदस्यों से एक परिवार जैसे संबंध रहे। मुझे आत्मिक भाव मिला। न पक्ष, न विपक्ष, सब मेरे लिए सदस्य हैं। मैंने सभी सदस्यों का मान सम्मान बढ़ाने का प्रयास किया है। मुझे कटुता के निर्णय भी लेने पड़े, लेकिन वे सदन की गरिमा और सदन की प्रतिष्ठा के लिए लेने पड़े।

आज जब हम लोक सभा की समाप्ति पर जा रहे हैं, तो हम अपने अपने लोक सभा क्षेत्र में जाएगे और हमने अपने सार्वजनिक जीवन में संसद के अंदर जिन अनुभवों को प्राप्त किया है, भारत के लोकतंत्र की समृद्धि और प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिए जो सहयोग किया है, उसकी जानकारी हम जनता को देंगे। इसके अलावा, हमने जो मुद्दे उठाए, उन मुद्दों को किस सकारात्मक रूप से सरकार ने लिया और किस सकारात्मक रूप से उन मुद्दों का हल निकाला, उसके लिए मैं सरकार को विशेष रूप से धन्यवाद देता हूँ।

मैं माननीय उपराष्ट्रपति जी को धन्यवाद देता हूँ, जिनका मुझे हमेशा सकारात्मक सहयोग मिलता रहा है। मैं माननीय प्रधानमंत्री जी को विशेष रूप से धन्यवाद देता हूँ, जिनका मुझे हमेशा मार्गदर्शन मिलता रहा और उन्होंने हमेशा एक कोशिश की कि सदन की गरिमा और प्रतिष्ठा बनी रहे।

लोकतंत्र के अंदर भारत की जो प्रतिष्ठा है, वह दुनिया के लिए मार्गदर्शन है और उन्होंने हमेशा यही मार्गदर्शन किया कि संसद की प्रतिष्ठा बनी रहनी चाहिए, मर्यादा बनी रहनी चाहिए। व्यक्ति आएंगे, चले जाएंगे, लेकिन सदन और सदन की पीठ की मर्यादा बनाने के लिए उनका मार्गदर्शन मुझे हमेशा मिलता रहा, इसके लिए मैं प्रधानमंत्री जी को धन्यवाद देता हूँ।

मैं सभी पैनल ऑफ चेयरपर्सन्स को बहुत बहुत धन्यवाद देता हूँ, जिन्होंने यहां पर बहुत देर तक बैठकर सदन की कार्यवाही को चलाया। मैं माननीय संसदीय कार्यमंत्री, संसदीय कार्य राज्य मंत्री तथा केन्द्रीय मंत्रिपरिषद के सभी माननीय सदस्यों को भी धन्यवाद देता हूँ, जिन्होंने सदन चलाने में सकारात्मक सहयोग दिया। मैं प्रेस और मीडिया के मित्रों को भी धन्यवाद देता हूँ, जिन्होंने सदन की बात को जनता तक पहुंचाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

मैं सभा को प्रदान की गयी समर्पित, त्वरित सेवा के लिए हमारे ऊर्जावान लोक सभा के महासचिव, अधिकारियों और कर्मचारियों की भी सराहना करता हूँ, जिन्होंने देर रात्रि तक बैठकर सदन के संचालन में सहयोग किया।

मैं परिसर में हमारे सिक्योरिटी से लेकर तमाम लोगों को, छोटे से छोटे श्रमवीरों को, जो देर रात्रि तक यहां पर रूकते थे और हमारी माननीय सदस्यों का सहयोग करते थे, उन सबका भी मैं आभार व्यक्त करता हूं।

मैं सभा की कार्यवाही के संचालन में सम्बद्ध समस्त एजेंसियों को, उनके द्वारा प्रदान की गई सेवाओं के लिए धन्यवाद देता हूँ।

अलग अलग दल के नेताओं ने इस संसदीय पीठ के लिए और मेरे लिए जो विचार व्यक्त किए हैं, इसके लिए भी मैं आपको धन्यवाद देता हूँ।

मुझे आशा है कि हम सबका भावी जीवन समृद्ध हो, स्वस्थ रहे, कुशल रहें और हम इसी तरीके से लोकतंत्र के मूल्यों का संवर्धन करने में अपना जीवन समर्पित करें और हमने यहां पर जो अनुभव प्राप्त किया है, उस अनुभव का लाभ देश की जनता को मिले। हमारे प्रयासों से हम समाज के अंतिम व्यक्ति के जीवन को बदलने के लिए हमारी जिन्दगी को लगातार इसी तरीके से समर्पित करते रहे और सेवा देते रहे।

मैं आप सबको पुनः बहुत बहुत धन्यवाद देता हूँ। अब वन्दे मातरम की धुन बजाई जाएगी।

(वन्दे मातरम की धुन बजाए जाने के पश्चात)

सभा की कार्यवाही अनिश्चित काल के लिए स्थगित की जाती है।